International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

आधुनिक सूफी संगीत में नव प्रयोग

Dr. Vivek Ranga

Associate Professor of (Music Vocal)

Govt. College for Women, Karnal

शोध सार

भारतीय संगीत का यह सौभाग्य था कि नौवी शती ई. में शेख जुनैद बगदादी ने ईश्वरीय प्रेम में मग्न होकर गाना बजाना , नाचना और भाव विहल होना आवश्यक बताया। इसी शताब्दी में सलमान पारसी ने ईश्वर को प्रेम या भक्ति का वशवर्ती बताया। फलत: बारहवीं शताब्दी ई. के अन्त में शैख मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी जैसे सूफी प्रचारक ने भारतीय कीर्तन पद्धति को निरखा, परखा और भारतीय बोली में गीतों की रचना कराकर भारतीय श्रोताओं के समक्ष भारतीय में प्रस्तुत किया। शेख निजामुद्दीन चिश्ती के निर्देशन में अमीर खुसरों ने सूफी संगीत को भारतीय जनता के हृदय के अत्यन्त निकट ला दिया। वे पूर्ण रूपेण भारतीय थे और उन्हें अपने भारतीय होने पर गर्व था। भले ही वे भारतीय संगीतशास्त्र से प्रगाढ़ रूप में परिचित नहीं थे परन्तु भारत की आत्मा से सुपरिचित थे। सूफी संगीत भारतीय संस्कृति एवं समाज का एक अभिन्न अंग उस समय बना जब हिन्दू और मुस्लिम कलाकारों की कला में सामजस्य की भावना उत्पन्न हुई। इतिहास जानता है कि मुस्लिम लोग एवं संस्कृति भारतीय समाज में जब आई तो इसने यहां पर अनेक परिवर्तन किए। इसी परिवर्तन का परिणाम है कि आज भारत में अनेक गायन शैलियां प्रचार में है जिनका निर्माण इन दोनों संस्कृतियों के संसर्ग से हुआ है।

मुख्य शब्द: सूफी संगीत, भारतीय, प्रयोग, कला, संस्कृति

मानव की प्रवृत्ति सदैव नवीन चिन्तन की और रही है वर्तमान परिस्थितियों और सूफियों के इतिवृत्तों में आयी हुई ये अनुवांशिक चर्चाएं ही संगीतज्ञों के इतिहास का मेरूदण्ड बन सकती है। इस दिशा में सर्वांगीण प्रयत्न सामूहिक रूप से ही सम्भव है। किसी एक व्यक्ति के वश की बात नहीं भक्तिपरक संगीत को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानने वाली चिश्ती परम्परा के लेखकों ने भी विभिन्न खानकाहों से सम्बन्धित कव्वालों का इतिहास नहीं लिखा और न जाने क्यों इस पवित्र कार्य के लिए किसी सूफी सन्त

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

ने भी अपने किसी 'शिष्य' को प्रेरणा नहीं दी भारतीय संगीत का यह सौभाग्य था कि नौवी शती ई. में शेख जुनैद बगदादी ने ईश्वरीय प्रेम में मग्न होकर गाना बजाना, नाचना और भाव विहल होना आवश्यक बताया। इसी शताब्दी में सलमान पारसी ने ईश्वर को प्रेम या भक्ति का वशवर्ती बताया। फलतः बारहवीं शताब्दी ई. के अन्त में शेख मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी जैसे सूफी प्रचारक ने भारतीय कीर्तन-पद्धति को निरखा, परखा और भारतीय बोली में गीतों की रचना कराकर भारतीय श्रोताओं के समक्ष भारतीय धुनों में प्रस्तुत किया। शेख निजामुद्दीन चिश्ती के निर्देशन में अमीर खुसरों ने सूफी संगीत को भारतीय जनता के हृदय के अत्यन्त निकट ला दिया। वे पूर्ण रूपेण भारतीय थे और उन्हें अपने भारतीय होने पर गर्व था। भले ही वे भारतीय संगीतशास्त्र से प्रगाढ़ रूप में परिचित नहीं थे। परन्तु वे भारत की आत्मा से सुपरिचित थे। सूफी संगीत भारतीय संस्कृति एवं समाज का एक अभिन्न अंग उस समय बना जब हिन्दू और मुस्लिम कलाकारों की कला में सामजस्य की भावना उत्पन्न हुई । इतिहास जानता है कि मुस्लिम लोग एवं संस्कृति भारतीय समाज में जब आई तो इसने यहां पर अनेक परिवर्तन किए। इसी परिवर्तन का परिणाम है कि आज भारत में अनेक गायन शैलियां प्रचार में है जिनका निर्माण इन दोनों संस्कृतियों के संसर्ग से हुआ है।

आचार्य बृहस्पति ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि 'मुस्लिम सूफी उस युग में यहाँ आ गये थे , जिस युग में किसी मुस्लिम आक्रान्ता का पैर भारत भूमि पर न पड़ा था।" ये लोग एक प्रकार से वे लोग थे, जिन्होंने यहां आकर भारतीयों के आचार-विचार को समझा , भारतीय भाषाओं का परिचय प्राप्त किया।

संगीत की तीनों विधाओं में मानव की इस प्रवृत्ति ने अभूतपूर्व परिवर्तन एंव संवर्धन किए , जिसके फलस्वरूप कई नयी गीत शैलियाँ अस्तित्व में आई वाद्यों में आवश्यकता की दृष्टि से परिवर्धन परिवर्तन किया गया। जहाँ तक संगीत में प्रमाण के निश्चित अनुपात में होने का प्रश्न है , शास्त्रीय रागदारी में आलाप- जोड़ के उपरान्त स्थायी, अन्तरा की उठान, तान या तोड़ो आदि का विस्तार पकड़ लयकारी, राग की बढ़त आदि का यथेष्ट अनुपात से ध्यान रखा जाता है , तभी इस कला में निखार आता है। सूफी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

संगीत में भी कई प्रकार के परिवर्तन एवं संवर्धन हुए जिसके कारण आज सूफी संगीत भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग बन चुका है।

सूफी संगीत में नवीन प्रयोग

भारतीय इतिहास में मध्ययुग कंवल भोग विलास के लिए ही नहीं अपितु विविध कलाओं के विकास के लिए भी प्रसिद्ध है। जिस प्रकार ईरानो एवं भारतीय शैलियों के मेल से एक नवीन शैली का विकास हुआ. उसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में भी ईरानी एवं हिन्दुस्तानी संगीत के मिश्रण से अनेक रागों एवं वाद्यों का विकास हुआ। इससे पहले भारतीय संगीत में वस्तुरूपक जैसे संस्कृत प्रबंधों का गायन किया जाता था । प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं में गीति दोहा जैसी प्राकृत गीतियां गाई जाती थी। मार्गों में परमात्मा से संबंधित गीत गाए जाते थे और देश में दैनिक जीवन के सुख दुखों को प्रस्तुत करने वाले गीतों का समावेश था।

क. नवीन रागों का प्रयोगः-

मध्यकाल की अनेक संस्कृतियों एवं धार्मिक परम्पराओं में सूफी परम्परा अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह परम्परा आठवी-नौवीं शताब्दी से विकसित होने लगी थी और मध्यकाल तक आते- आते अपने उत्कर्ष पर थी इस परम्परा ने भारतीय संस्कृति, साहित्य तथा विशेषतः यहाँ के संगीत को बहुत प्रभावित किया। ये लोग अपनी बातों को भारतीय रंग में रंगकर इस प्रकार कहते कि भोले भाले अशिक्षित भारतीय उनको अपना मुक्तिदाता और उद्धारक मानने लगे। मुल्तान के प्रसिद्ध सूफी शेख बहादद्दीन रिया मुल्तानी संगीत के विद्वान थे। जिन्होंने मुल्तानी , श्री राग का आविष्कार किया। आचार्य बृहस्पति जी के अनुसार, खिलजी के युग में हो अमीर खुसरों ने भारतीय रागों का वर्गीकरण किया। हिन्दी में जो गेय रचनाएं मिलती है या लिखी गई है उन्हें भारतीय धुनों में गाया गया। इन सबके अलावा वृंदावनी सारंगी , गौड सारंग, मेवाड, टंक, मारवा, बंगाल भैरव, एमन, सिंध, भैरवी आदि नवीन राग भी सुफी संगीत की देन है। प्राचीन काल से आधुनिक समय तक उत्तर भारत में राग का विस्तार पकड़ , लयकारी, राग की बढ़त आदि का विशेष ध्यान सूफी संगीत के अन्तर्गत ही रखा जाता है। नवीन ताल एवं गायन शैली का प्रयोग सैकड़ों वर्षों पहले भारत में सूफी विधा का पदार्पण हुआ था। अनेक सूफी बाहरी देशों से यहां

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

आए और इन्होंने यहां आकर सूफीमत का प्रचार-प्रसार करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सूफी संगीत भारतीय संगीत में इस प्रकार घुल-मिल गया है कि आज कोई भी सभ्य आदमी यह नहीं कह सकता कि वह मुस्लिम संगीत है। प्राचीन से आधुनिक समय तक उत्तर भारतीय संगीत में अनेक नवीन तालों जैसे कव्वाली धुमाली आदि तालों का निर्माण हुआ। इसके साथ-साथ अनेक तालों के अलग-अलग कई प्रकार के ठेके प्रचार में आए। यह सब मनुष्य की सृजनात्मक बुद्धि का ही परिणाम है। इस प्रकार के सृजन कार्य भाव स्वभाव, वातावरण एवं समय की मांग के अनुसार सहज रूप में ही हो जाते है। स्वर और ताल संगीत के दो प्रमुख तत्त्व है। स्वर, संगीत की आत्मा और ताल, उसके प्राण के समान है। सूफी संगीत ने बहुत सी नवीन गायन शैलियों को भी जन्म दिया। इन नवीन गायन शैलियों में कौल , कल्याना, नक्श, गुल आदि प्रमुख है। परन्तु वर्तमान में इनका प्रचलन काम है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि यह मानव की सृजनात्मक प्रतिभा ही है जो मानव, मानव समाज एवं संस्कृति को नवीनता प्रदान करती है। संगीत संबंधी किसी भी रचना के प्रस्तुतीकरण में इन सभी कलात्मक अवयवों में समुचित प्रमाण एवं प्रयोग विधि में सामजस्य बैठाया जाता है, तभी इस कला में निखार आता है। अतः संगीतकला में प्रमाण की व्यापकता का विशेष महत्त्व है। इस प्रकार आज सूफी संगीत में कई प्रकार के नवीन परिवर्तन हुए जिसकी वजह से सूफी संगीत भारतीय समाज का प्रमुख हिस्सा बन चुका है।

(ख) आधुनिक नये प्रयोगों का सूफी संगीत पर प्रभावः

मनुष्य प्राचीन काल से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए-नए आविष्कार करता रहा है। इन्हीं आविष्कारों के फलस्वरूप संगीत कला का विकास भी निरन्तर चलता रहा है। हमारे प्राचीन साहित्य में भी राग और सांगीतिक बंदिशों के सिद्धान्त प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में मिलते है। इन्हीं कार्यों , परिवर्तनों एवं सवंर्धनों के फलस्वरूप ही कई प्रकार की नवीन गीत शैलियाँ भी अस्तित्व में आई ये परिवर्तन वाद्यों के वादन एवम् निर्माण की दृष्टि से किए गए तथा नए-नए सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया। इसके साथ-साथ अनेक नवीन रागों का निर्माण एवं धुनों का निर्माण भी समय समय पर होता रहा। वर्तमान में भी अनेक नवीन रागों व बंदिशों का निर्माण किया जा रहा है जिनका आधार कहीं न

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

कहीं हमारे प्राचीन ग्रंथ व साहित्य रहे हैं। सूफियों ने भारत आकर यहां के चिताकर्षक एवं उदात संगीत को सुना, तो वे हैरान रह गये। उनमें से अनेकों ने यहां के संगीत को आत्मसात किया तथा भारतीय एवं अरबी संगीत का सम्मिश्रण करके अनेकों प्रयोग किए। उन प्रयोगों से संगीत की नई धारा बनी, जो सूफी खानकाओं का संगीत बनकर हमारे सामने आई।

वर्तमान में इसी सूफी संगीत का सरंक्षण किया जा रहा है। सूफी गायकों को जातियाँ पीढ़ियाँ कई वर्षों से एक ही प्रकार के गायन को पेश कर रही है। यह बात ठीक है कि इन लोगों में संगीत का कार्य पीढ़ियों से चला आ रहा है, लेकिन संगीत कोई आसान या सहज कार्य नहीं है। गायन का सौन्दर्य, लय एवं स्वरों की सच्चाई वि तन्मयता संगीत की प्रमुख आवश्यकता है इसके लिए गायक की लगन , नैसर्गिक देन तथा अभ्यास की जरूरत होती है। सूफी कवियों ने इन प्रेमाख्यानों को गाते समय अपने गायन में अनेक लोकवाद्यों का भी उपयोग किया। उन्होंने अपने गायन में सुरिन्दा अलगोजा , सारंगी, स्वरमण्डल, तम्बूरा, हारमोनियम, ढोलक आदि वाद्यों का प्रयोग गेय पक्ष में ही नहीं अपितु काव्य पक्ष में किया। प्रेमाख्यानों पर आधारित ये गीत अलग-अलग सुर में निबद्ध होते है। प्रत्येक स्तर का अपना एक विशिष्ट प्रभाव है। इन गेय प्रेमाख्यानों के संगीतात्मक स्वरूप को जानने से ज्ञात होता है कि इनकी अपनी ही विशिष्ट 'धुन' है। वहीं 'धुन' अन्नतः राग के रूप में स्थापित हो गई। एक-एक प्रेमाख्यान में काव्य और संगीत के कितने ही रूप देखने को मिलते है।

जैसे काफी कलाम, डोर इत्यादि यही कारण है कि वर्षों पुराना सूफी संगीत आज भी आत्मा बना हुआ है। किसी भी कला में नवीनता एवम् सृजनशीलता का होना अत्यावश्यक होता है सूफी संगीत भी इससे अछूता नहीं है। समय और आवश्यकता के अनुसार सभी कलाओं में परिवर्तन आवश्यक है। कला सृजन की प्रक्रिया एक प्रकार से मानव को दार्शनिक बनाती है। प्लेटों ने कहा है कि नैसर्गिक भावों को व्यक्त करने के लिए कलाकार की वाणी और मस्तिष्क स्वयं कुछ नहीं करते , अपितु ईश्वर उन्हें प्रेरित करता है। इसका अर्थ है सृजन-प्रक्रिया ईश्वर-प्रदत्त होती है अतः एक संगीतकार के व्यक्तित्व में आकर्षण मधुर कण्ठ, सोखने और समझने की तीव्र इच्छा, प्रेरणा, ग्रहण शक्ति, कल्पना और नवीनता आदि गुणों का होना आवश्यक माना गया है। ये भौतिक प्रतिभा अथवा प्रवृत्तियाँ ही एक उत्तम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

कलाकार की सृजनात्मक शक्ति के अनुसार अनेक प्रकार को बन्दिशों, गर्यो तानों व आलाप आदि को उत्पन्न करने की शक्ति प्रदान करती है।

सुफी परम्परा से भारतीय संगीत में अनेक अनमोल रत्न प्राप्त हुए। अरबी , फारसी और भारतीय भाषाओं के मिश्रण के फलस्वरूप और विशेषकर सूफियों के प्रभाव के कारण जनसाधारण सुलभ हिन्दी भाषा का जन्म हुआ। अरबी-फारसी शब्दों के बाहुल्य प्रधान हिन्दी को ही उर्दू की संज्ञा दी गई जब नवनिर्मित हिन्दी को ही दक्षिण के पंडितों ने 'तुरुक भाषा' कहा तो सूफियों की परम्परा ने इस भाषा का नाम 'दकनी अथवा 'दकनी हिन्दी' रखा। गुजरात में इसे 'गुजरी' भी कहा गया, परन्तु समस्त भारत में इसका नाम 'हिन्दी' ही प्रचलित रहा। उस समय हिन्दुस्तान शब्द 'उत्तर भारत' अर्थ का बोध कराता था और दक्षिण भारत के लिए 'दकन' शब्द प्रयुक्त होता था। भारत-ईरानी मिश्रित धुनों का भी प्रयोग उनमें हुआ। इस प्रकार सूफी संगीत ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी अपना अमूल्य योगदान दिया। सूफियों ने ख्याल का आविष्कार किया हो या न किया हो , इस विवाद में हम नहीं पड़ना चाहते, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ऐसे ख्याल गीत भारतीय संगीत में प्राप्त है जो सूफी विचारधारा से प्रभावित होते रहे है। इसी प्रकार सूफियों ने तराने में भी फारसी शायरी को जोड़ कर उसे भी एक सार्थक आयाम दिया। दुमरी गायकी की भाव-भंगिमा तो उनके प्रेम-दर्शन के निकट ही है। ग्राम मूर्च्छना पद्धति के स्थान पर मुकाम और मेल पद्धति का प्रचार किया तथा अनेक वाद्यों का भी प्रचार-प्रसार किया। सूफियों ने कव्वाली जैसी एक अनूठी गायन शैली का विकास किया , जो आज भारतीय संगीत में अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली विधा है। सूफियों की कव्वाली का प्रभाव भारतीय भक्ति संगीत पर भी पड़ा तथा कीर्तन एवं सत्संग में भी कव्वाली के तत्वों का समावेश हुआ आज कव्वाली भारतीय संगीत का अभिन्न अंग बन चुकी है बहुत सी फिल्मों में कव्वालियों का सफल प्रयोग हुआ है पीरों और मजारों के अलावा सामान्य संगीत सभाओं में भी सूफी संगीत की व्यवहारिकता बढ़ी है।

सूफी संगीत के साथ-साथ आज भारतीय और पाश्चात्य संगीत को लेकर भी अनेक प्रयोग किए जा रहे है और इसके परिणाम भी सार्थक सिद्ध हो रहे है। संगीत को योग के साथ जोड़कर अथवा यह कह सकते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

है कि संगीत में निहित योग तथा चिकित्सा के तत्वों को शोध और परीक्षणों के माध्यम से साधारण मानव के लिए लाभदायी बनाने का प्रयास किया जा रहा है शिक्षण से जुड़े हुए विभिन्न संस्थान भी संगीत एवं अन्य विभिन्न कलाओं को व्यवसायिक दृष्टि से उच्च शिखर की ओर अग्रसर कर रही है। अतः सूफी संगीत भी इसका एक हिस्सा बनता जा रहा है वर्तमान समय में प्रचलित 'खयाल' गायन शैली का मूलाधार भी निःसंदेह ही कल्पना एवम् मानव की सृजनशीलता ही है। सूफी संगीत का मूल भाव भी यही है। अतः आज भी ख्याल शैली कहीं कहीं संगीत से ही प्रभावित दिखाई पड़ती है। ख्याल गायन कि अनेक बंदिशें इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में अनेक ऐसी गायिका हुई है जिन्होंने संगीत को इस पवित्र धारा में अनेक प्रयोग किए है। इसके कारण सूफी जो एक विशिष्ट प्रकार एवं विशिष्ट वर्ग का संगीत रहा है , वह आम आदमी तक पहुंचा और आम आदमी ने इसका अनुभव किया। 4,3 सूफी संगीत में नवीन प्रयोगवादी प्रवृत्ति की सार्थकता नवीनता एवं सृजनशीलता किसी भी समाज संस्कृति एवं विषय के लिए अतिआवश्यक होती है। किसी भी विधा को कायम रखने के लिए उसमें नए-नए प्रयोग करते रहना चाहिए। यह बात सूफी संगीत के विषय मैं भी लागू है हमने देखा है कि प्राचीन समय के मूलभूत सूफी संगीत में आज के गायक-गायिका एवं संगीतकारों ने कई प्रकार के नए प्रयोग किए है। क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही सृजनशील है। अतः प्राचीन काल सेहो संगीत की इस विधा में नवीनता एवम सृजनशीलता पाती रही है। सूफियों ने भारत में आकर यहाँ के संगीत को सुना तो वे आश्चर्यचकित रह गए और भारतीय भी इन सूफियों के ईश्वर प्रेम में न होकर नाचने और गाने की कला से आकृष्ट हुई। ये सूफी लोग जात-पात पूछे ना कोई , हरि को भजै सो हरि का होई" जैसी बाते करते थे। इनके विचार भारतीय को अपने अन्दर की प्रतिध्वनि प्रतीत होते थे। अतः इन्होंने सामान्य जनता के स्तर पर उतरकर सरल शब्दों में अपनी बात कहीं। ये भारत के लोकजीवन में रंगे , और इन्होंने यही की धुनों को अपने गीतों में गाया। उन्होंने यहाँ के संगीत के आत्मसात करके भारतीय और अरबी संगीत के सम्मिश्रण से अनेकों प्रयोग किए। इन प्रयोगों से संगीत की नई धारा उत्पन्न हुई , जो सूफी खानकाओं का संगीत बनकर हमारे सामने आई।

ये प्रयोग जहां अपनी सार्थकताओं को प्रमाणित करते है , वहीं इनकी वजह से सूफी संगीत के मूल स्वरूप को लेकर भ्रम भी नई पीढ़ी में पैदा हो सकता है। इन प्रयोगों के कारण ही सूफी संगीत आम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

समाज में व्याप्त हुआ है।' पाकिस्तानी सूफी गायिका आबिदा परवीन ने सूफी संगीत में अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। काफी उनके गायन की प्रमुख शैली रही है। जो सूफी संगीत की प्रमुख गायन शैली है। ठुमरी पर आध शारित सूफी संगीत के अनेक उदाहरण भारतीय फिल्मी संगीत से भरे पड़े है। फिल्म उमराव जान के सभी गीत कहीं न कहीं इस सूफी संगीत से ही प्रभावित जान पड़ते है।

इस फिल्म के गीतों में जहाँ सूफी संगीत का एक अलग रूप दिखाई देता है। वही विभिन्न गायन शैलियों का सम्मिश्रण भी इस फिल्म के गीतों में दिखाई देता है। इन सभी प्रकार के प्रयोग ने भारत में सूफी संगीत को एक नई दिशा एवं दशा प्रदान की। इन्हीं प्रयोगवादी प्रवृत्ति के कारण ही सूफी संगीत का माध्यम उर्दू के साथ-साथ हिन्दी भी बनी। आज सूफी संगीत केवल सन्तों एवं मजारों तक सीमित नहीं है | सही मायने में देखा जाए तो मालूम होता है कि संगीत की अच्छी समझ रखने वाले गायक-गायिका सूफी संगीत यथा कव्वाली और गजल गाना अधिक पसन्द करेंगे। अतः निःसंदेह ही सूफी संगीत में हुए नवीन प्रयोग संगीत की इस विधा के लिए सार्थक सिद्ध हुए है।

संदर्भ-

1. आचार्य बृहस्पति, मुसलमान और भारतीय संगीत, पृ. 26

2. सुलोचना यजुर्वेदी, खुसरो तानसेन तथा अन्य कलाकार, पृ. 16

3. संपादक, संगीत मासिका पत्रिका, अप्रैल 1962, पृ. 9

4. सुलोचना बृहस्पति खुसरों, तानसेन तथा अन्धकलाकार, पृ. 31

5. डॉ. शिवसहाय पाठक, मल्लिक मुहम्मद जायसी और उनका

6. आ. बृहस्पति, मुसलमान और भारतीय संगीत, पृ.सं. 20-21

7. डॉ. शिवसहाय पाठक, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य, पृ. 388